ध्यान दें:

15

राम सुग्रीव की मित्रता

वनवास के समय में लंकेश्वर रावण ने माता सीता का अपहरण किया। फिर श्री राम ने सुग्रीव के साथ मित्रता करके सुग्रीव के शत्रु बाली को मार दिया। उसके बाद वानर सेना की सहायता से और हनुमान की सहायता से रावण को मारकर सीता की रक्षा की ऐसा हम सभी जानते हैं। किन्तु सुग्रीव के साथ किस प्रकार से उसकी मित्रता हुई इस विषय में हम बहुत ही अज्ञानी हैं। उस ही विषय को हम इस अन्तिम पाठ में जानते हैं। सुग्रीव के साथ मित्रता करने की इच्छा को लक्ष्मण से कहते हुए हनुमान अपने राजा की विजय अवश्य होगी ऐसा विचारकर अत्यन्त आनन्दित हुआ। इस विषय को स्पष्ट रूप से जानने के लिए अब हम अन्तिम चार श्लोक पढ़ें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- लक्ष्मण की वाक् निपुणता के विषय जानने में;
- हनुमान की राजा के ऊपर कितनी प्रीति थी ऐसा जानने में;
- श्लोक में स्थित पदों का अन्वय किस प्रकार से करना चाहिए ऐसा जानने में;
- व्याकरण विषयक कुछ ज्ञान को प्राप्त करने में;
- श्लोकों की व्याख्या किस प्रकार से करनी चाहिए इस विषय में;

15.1) मूलपाठ

एवम् उक्तस्तु सौमित्रिः सुग्रीवसचिवम् कपिम्।
अभ्यभाषत वाक्यज्ञो वाक्यज्ञम् पवनात्मजम्॥36॥

विदिता नौ गुणा विद्वन सुग्रीवस्य महात्मनः।
तमेव चावाम् मार्गावः सुग्रीवम् प्लवगेश्वरम्॥37॥

ध्यान दें:

यथा ब्रवीषि हनुमान् सुग्रीव वचनादिह।
तत् तथा हि करिष्यावो वचनात् तव सत्तम॥38॥

तत् तस्य वाक्यम् निपुणम् निशम्य।
प्रहृष्ट रूपः पवनात्मजः कपिः।
मनः समाधाय जयोपपत्तौ
सख्यं तदा कर्तुमियेष ताभ्याम्॥39॥

15.2) अब मूल पाठ को समझें

एवम् उक्तस्तु सौमित्रिः सुग्रीवसचिवम् कपिम्।
अभ्यभाषत वाक्यज्ञो वाक्यज्ञम् पवनात्मजम्॥36॥

अन्वय- रामेण एवम् उक्तः वाक्यज्ञः सौमित्रिः वाक्यज्ञं सुग्रीवसचिवं पवनात्मजं कपिम् अभ्यभाषत।

अन्वयार्थः- राम के द्वारा कहे हुए वाक्यों में निपुण लक्ष्मण ने वाक्य तात्पर्यज्ञ सुग्रीव के सचिव वानरराज पवन पुत्र वानर हनुमान को कहा।

सरलार्थः- जब राम ने लक्ष्मण के समीप में हनुमान की प्रशंसा की, फिर उस लक्ष्मण ने राम के वचनानुसार वायु पुत्र से वानर राज सुग्रीव के सचिव से, महाज्ञानी हनुमान के साथ वार्तालाप को करना आरम्भ किया।

तात्पर्यार्थः- राम ने इतने समय तक लक्ष्मण के पास में हनुमान की बहुत प्रशंसा की। इसीलिए सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण ने राम के वचन से हनुमान की महत्ता को जाना, फिर उन्होंने अब वायु नन्दन हनुमान के साथ बातचीत करना आरम्भ किया। हनुमान की वाक् कुशलता पूर्व में ही वर्णित है। इस श्लोक से तो महर्षि वाल्मीकि ने लक्ष्मण की भी वाक् कुशलता को वर्णित किया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सुग्रीवसचिवम् - सुग्रीवस्य सचिवः इति-षष्ठी तत्पुरुष समास।
- अभ्यभाषत- अभि + भाष् धातु लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- सौमित्रिः - सुमित्रा + इञ् प्रत्यय।

सन्धि युक्त शब्द

- वाक्यज्ञो वाक्यज्ञम् - वाक्यज्ञः + वाक्यज्ञम्। विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- रामेण एवम् उक्तेन वाक्यज्ञेन सौमित्रिणा वाक्यज्ञः सुग्रीवसचिवः पवनात्मजः कपिः अभ्यभाष्यत।

विदिता नौ गुणा विद्वन सुग्रीवस्य महात्मनः।
तमेव चावाम् मार्गावः सुग्रीवम् प्लवगेश्वरम्॥37॥

अन्वय- हे विद्वन नौ महात्मनः सुग्रीवस्य गुणाः विदिताः अत एव आवां तं प्लवगेश्वरं सुग्रीवम् एव मार्गावः।

ध्यान दें:

अन्वय अर्थ- हे महाज्ञानी हम दोनों राम लक्ष्मण महाबुद्धिशाली सुग्रीव के गुणों को जानते है। इसीलिए हम दोनों राम लक्ष्मण उस वानर राज सुग्रीव को ही खोज रहे हैं।

सरलार्थः- लक्ष्मण ने हनुमान के प्रति कहा कि हे महाज्ञानी हनुमान हम दोनों वानर राज सुग्रीव की महत्ता को जानते हैं, इसीलिए हम दोनों उस सुग्रीव की खोज करते हैं।

तात्पर्यार्थः- वानर राज सुग्रीव की खोज के लिए राम लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत के समीप आए। और वहाँ आकर हनुमान के साथ साक्षात्कार हुआ। हनुमान ने उन दोनों से सुग्रीव की बहुत प्रशंसा की। और कहा कि सुग्रीव उन दोनों के साथ मित्रता करना चाहता है। इसीलिए उसे यहाँ भेजा। इसीलिए लक्ष्मण ने राम के आदेशानुसार हनुमान को कहा कि महात्मा सुग्रीव के गुणों को हम दोनों जानते हैं। हम दोनों तो सुग्रीव के साथ साक्षात्कार करने के लिए इस दुर्गम देश को आए। इस श्लोक में लक्ष्मण ने हनुमान के द्वारा पूछे 'तुम दोनों इस दुर्गम देश को कैसे आए' इस प्रश्न का भी उत्तर दे दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विदिताः - विद् धातु + क्त प्रत्यय प्रथमा बहुवचन ।
- मार्गावः - मार्ग धातु लट् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन।
- प्लवगेश्वरम् - प्लवगानाम् ईश्वरः इति षष्ठी तत्पुरुष समास।

सन्धि युक्त शब्द

- विदिता नौ - विदिताः + नौ। विसर्ग सन्धि।
- चावाम् - च + आवाम। सवर्णदीर्घसन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- हे विद्वन नौ महात्मनः सुग्रीवस्य गुणाः विदिताः अत एव आवाभ्यां स प्लवगेश्वरः सुग्रीवः एव मार्ग्यते।

यथा ब्रवीषि हनुमान् सुग्रीव वचनादिह।
तत् तथा हि करिष्यावो वचनात् तव सत्तम॥38॥

अन्वय- हे हनुमन् सुग्रीववचनात् यथा यत् त्वम् इह ब्रवीषि, तत् तव वचनात् आवां करिष्यावः।

अन्वयार्थः- हे हनुमान सुग्रीव के वचन से जैसे सुग्रीव मित्रता की इच्छा करता है जो की तुमने यहाँ कहा, वह मित्रता को तुम्हारे वचन अनुसार करेगा।

सरलार्थः- लक्ष्मण ने हनुमान को कहा कि वानर राज सुग्रीव हम दोनों के साथ मित्रता की इच्छा करता है, इसीलिए तुम को यहाँ भेजा। इसीलिए हम दोनों भी तुम्हारे वचन के अनुसार उनके साथ मित्रता को स्वीकार करना चाहते हैं।

तात्पर्यार्थः- हनुमान ने राम लक्ष्मण से कहा कि वानर राज सुग्रीव तुम्हारे साथ मित्रता करना चाहते हैं। इसलिए उसे यहाँ उन दोनों के पास भेजा। राम लक्ष्मण भी उस सुग्रीव के साथ मिलने के लिए यहाँ आए। इसलिए वे दोनों वानरराज सुग्रीव की मित्रता को स्वीकार करना चाहते हैं। इसलिए लक्ष्मण ने हनुमान को कहा कि हे हनुमन तुमने कहा कि सुग्रीव हम दोनों के साथ मित्रता करना चाहता है, तुम्हारे वचनों के अनुसार हम वैसा ही करेंगे। इस श्लोक में लक्ष्मण ने हनुमान के लिए सत्तम् सम्बोधित किया। सत्तम

ध्यान दें:

इसका अर्थ है जो सज्जनों में भी श्रेष्ठ हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- ब्रवीषि - ब्रू धातु लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन।
- सुग्रीववचनात् - सुग्रीवस्य वचनं इति। षष्ठी तत्पुरुष समास।
- सत्तम - सत्सु उत्तमः। सत् + तमप् प्रत्यय।

सन्धि युक्त शब्द

- सुग्रीववचनादिह - सुग्रीववचनात् + इह। जश्त्व सन्धि।
- करिष्यावो वचनात् - करिष्यावः + वचनात्। विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- हे हनुमन् सुग्रीववचनात् यथा यत् त्वया इह ब्रूयते, तत् तव वचनात् आवाभ्यां करिष्यते।

तत्तस्य वाक्यम् निपुणम् निशम्य।
प्रहृष्ट रूपः पवनात्मजः कपिः।
मनः समाधाय जयोपपत्तौ
सख्यं तदा कर्तुमियेष ताभ्याम्।।39।।

अन्वय- प्रहृष्टरूपः पवनात्मजः कपिः तस्य तत् वाक्यं निपुणं निशम्य जयोपपत्तौ मनः समाधाय ताभ्यां सख्यं कर्तुम् इयेष।

अन्वयार्थः- पवन पुत्र हनुमान लक्ष्मण के निपुण वाक्यों को सुनकर सुग्रीव की विजय सिद्धि का मन में विचार कर तुम दोनों राम लक्ष्मण मित्रता को करने के लिए इच्छित हो ऐसा जानकर हृदय से आनन्दित हुआ।

सरलार्थः- राम लक्ष्मण भी सुग्रीव के साथ मित्रता करना चाहते हैं हनुमान ने लक्ष्मण के मुख से सुना। उससे सुग्रीव की विजय अवश्य होगी ऐसा विचार कर वह बहुत आनन्दित हुआ। इसलिए वह राम लक्ष्मण के साथ मित्रता करना चाहता है।

तात्पर्यार्थः- राम लक्ष्मण भी सुग्रीव के साथ मित्रता करना चाहते हैं ऐसा लक्ष्मण के मुख से हनुमान ने जाना। राम लक्ष्मण के समीप दिव्य धनुष-तलवार-बाण- इत्यादि शस्त्र हैं। और उन दोनों में महान वीरत्व है, जो साधारण नहीं है यह सब हनुमान ने जाना। इसलिए इस प्रकार के वीर यदि वानरों के राजा सुग्रीव के मित्र हो तो बाली के साथ युद्ध में उन दोनों की सहायता से सुग्रीव की अवश्य ही विजय होगी वह निश्चित हुआ। इसलिए वह पवन पुत्र हनुमान उस विषय में गूढ़ चिन्तन करके बहुत आनन्दित हुआ। इसलिए उसने राम लक्ष्मण के साथ मित्रता को करने के लिए विचार किया। प्रस्तुत श्लोक से हनुमान जैसे दूत सदैव राजा के हित आकांक्षी होते हैं ऐसा जानते हैं। इसलिए उसने आरम्भ में राजा सुग्रीव की विजय किस प्रकार से होगी ऐसा सोचा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- निश्मय- नि + शम् धातु + ल्यप् प्रत्यय।

ध्यान दें:

- प्रहृष्टरूपः - प्रहृष्टं रूपं यस्य स - बहुव्रीहि समास।
- समाधाय- सम् + आ + धा धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- जयोपपत्तौ - जयस्य उपपत्तिः। षष्ठी तत्पुरुष समास।
- इयेष -इष् धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

प्रयोग परिवर्तन- प्रहृष्टरूपेण पवनात्मजेन कपिना तस्य तत् वाक्यं निपुणं निशम्य जयोपपत्तौ मनः समाधाय ताभ्यां सख्यं कर्तुम् इषे।

छन्द परिचय- इस श्लोक में उपजाति छन्द है। उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं। एवं चार चरण एक श्लोक में होते हैं। उस सम्पूर्ण श्लोक में 44 अक्षर होते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. लक्ष्मण ने किसको कहा?
2. लक्ष्मण कैसा था?
3. राम लक्ष्मण को किसके गुण विदित है?
4. सुग्रीव की खोज में कौन आया?
5. हनुमान ने कहाँ चित्त को लगाया?
6. हनुमान ने क्या करने की इच्छा की?
7. तत्तस्य वाक्यं निपुणं निशम्य ..... श्लोक में कौन सा छन्द है।
8. अभ्यभाषत वाक्यज्ञो वाक्यज्ञं पवनात्मजम् यहाँ वाक्यज्ञ से कौन निर्दिष्ट है

   क. लक्ष्मण

   ख. हनुमान

   ग. राम

   घ. सुग्रीव
9. हनुमान ने किस शास्त्र को बहुत बार सुना था?

   क. न्यायशास्त्र

   ख. व्याकरणशास्त्र

   ग. ज्योतिषशास्त्र

   घ. शिक्षाशास्त्र

ध्यान दें:

10. तमेव चावां मार्गाव: सुग्रीवं प्लवगेश्वरम् यह किसकी उक्ति है।

क. राम की

ख. हनुमान की

ग. लक्ष्मण की

घ. बाली की

11. तत्तथा हि करिष्यावो वचनात्तव सत्तम - यहाँ सत्तम से किसको सम्बोधित किया गया है।

क. राम

ख. हनुमान

ग. लक्ष्मण

घ. सुग्रीव

12. मन: समाधाय जयोपपत्तौ सख्यं तदा कर्तुम् इयेष ताभ्याम् यहाँ हनुमान ने किसकी विजय उत्पत्ति के लिए मन: समाधत्तवान् ऐसा कहा।

क. राम की

ख. बाली की

ग. रावण की

घ. सुग्रीव की

13. क-स्तम्भ से ख-स्तम्भ को मिलाओ।

क- स्तम्भ	**ख- स्तम्भ**
1. प्लवगेश्वर:	क. अन्विषाव:
2. मार्गाव:	ख. सम्पादयिष्याव:
3. ब्रवीषि	ग. सुग्रीव:
4. करिष्याव:	घ. इष्टवान्
5. इयेष	ङ आत्थ

पाठ सार

भिक्षुरूपधारी हनुमान के हृदय को हरने वाले वचनों को सुनकर श्री राम अत्यन्त आनन्दित हुए। इसलिए उन्होंने पास में स्थित भाई को लक्षित करके हनुमान के पाण्डित्य की बहुत प्रशंसा की। हनुमान ने सुग्रीव के विषय में उन दोनों को कहकर सुग्रीव के सचिव के रूप में अपना परिचय दिया। फिर कहा कि सुग्रीव तुम दोनों के साथ मित्रता की इच्छा करता है इसलिए उसे यहाँ भेजा। वे दोनों भाई तो सुग्रीव

ध्यान दें:

से मिलने के लिए ही वहाँ गए। इसीलिए वे दोनों उस वाक्य को सुनकर आनन्दित हुए। फिर वाक्यों में निपुण, वाग्मी लक्ष्मण ने राम के आदेशानुसार वाक् निपुण हनुमान को कहा कि हम दोनों महात्मा वानरराज सुग्रीव के गुणों के विषय में जानते हैं, हम दोनों तो उस सुग्रीव को ही खोजते हुए यहाँ आ गए।

सुग्रीव राम लक्ष्मण के साथ मित्रता को चाहता है जो हनुमान ने कहा उसके अनुसार ही लक्ष्मण ने सुग्रीव की मित्रता को स्वीकार किया। और वह सुनकर हनुमान ने विचार किया कि इस प्रकार के दिव्य शस्त्रधारी वीर यदि सुग्रीव के मित्र होंगे तब बाली के साथ युद्ध में अवश्य ही सुग्रीव की विजय होगी। इसलिए अपने राजा की विजय के विषय में सोचकर उसको महान आनन्द हुआ। वह भी उनके साथ मित्रता करने को इच्छुक हुआ। यह पाठ का सार है।

आपने क्या सीखा

- जिसकी सहायता से कार्य सिद्ध होगा उसके साथ अवश्य ही मित्रता करनी चाहिए।
- गुणों को सम्यक् रूप से जानकर ही अपरिचितों के साथ मित्रता करनी चाहिए।
- स्थिति के आरम्भ में राजा की विजय के विषय में ही चिन्तन करना चाहिए।

पाठान्त प्रश्न

1. लक्ष्मण ने हनुमान को क्या कहा। सप्रसंग लिखिए।
2. राम लक्ष्मण सुग्रीव के साथ मित्रता करेंगे यह सुनने के बाद हनुमान कैसे आनन्दित हुआ।
3. तत्तस्य वाक्यं निपुणं निशम्य... श्लोक की व्याख्या कीजिए।

15.3) सन्दर्भ सूची

श्रीवाल्मीकिमहामुनिप्रणीतं रामायणम्। (रामप्रणीत-रामायणतिलक, शिवसहायप्रणीत-रामायणशिरोमणि, गोविन्दराजप्रणीत-रामायणभूषणेति टीकात्रयेणोपस्कृतम् तच्च कट्टिभिः श्रीनिवासशास्त्रिभिः संशोधितपाठान्तरैः टिप्पण्यादिभिश्च समलंकृतम् तथा सातडिमुखोपाध्यायशर्मणा विनिर्मिता विशदभूमिकया श्लोकानुक्रमण्या च सनाथीकृतम्।)2006। प्रकाशक- प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री। प्रकाशनम्- राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. सुग्रीव सचिव पवन पुत्र हनुमान को
2. वाक् निपुण
3. महात्मा सुग्रीव का
4. राम लक्ष्मण
5. विजय उत्पत्ति
6. राम लक्ष्मण के साथ मित्रता

ध्यान दें:

7. उपजाति छन्द

8. (क)

9. (ख)

10. (ग)

11. (ख)

12. (घ)

13. 1. (ग)

2. (क)

3. (ङ)

4. (ख)

5. (घ)